पाठ 15

मनभावन सावन

(प्रस्तुत कविता में कवी ने सावन के बरसते बादलों का मनोरम चित्र खींचा है | कविता के अंत में कवि ने जन - जन के जीवन में सावन का उल्लास भरने की कामना की है |)

झम-झम, झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,

छम-छम-छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के |

चम-चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,

थम-थम दिन के तम में स्सपने जगतेमन के ||

पंखों से रे, फैले-फैले ताड़ों के दल,

लम्बी-लम्बी अंगुलियाँ हैं, चौड़े करतल |

तड़-तड़ पड़ती धार वारि की उन पर चंचल,

टप-टप झरती कर मुख से जल बूँदें झलमल ||

नाच रहे हैं पागल हो ताली दे-दे चल-दल,

झूम-झूम सिर नीम हिलातीं सुख से विह्वल !

हरसिंगार झरते बेला-कलि बढ़ती प्रतिपल,

हँसमुख हरियाली में खगकुल गाते मंगल ||

दादुर टर-टर करते झिल्ली बजती झन-झन,

'म्याव' 'म्याव' रे मोर, 'पीउ' 'पीउ' चातक के गण।

उड़ते सोनबलाक, आर्द्र-सुख से कर क्रन्दन,

घुमड़ घुमड़ घिर मेघ गगन में भरते गर्जन।।

रिमझिम-रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,

रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अन्तर ।

धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर

रज के कण कण में तृण-तृण को पुलकावलि भर।।

पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन,

आओ रे सब मुझे घेर कर गाओ सावन।

इन्द्रधनुष के झूले में झूले मिल सब जन,

फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन।।

- सुमित्रानन्दन पन्त

पद्मभूषण तथा ज्ञानपीठ सम्मान प्राप्त सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म 20 मई सन् 1900 ई0 को अल्मोड़ा जिले के कौसानी ग्राम मंे हुआ था। पन्तजी को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। 'पल्लव, 'गुंजन', 'युगान्त', 'युगवाणी', 'स्वर्णधूलि', 'चिदम्बरा' उनकी प्रख्यात काव्य रचनाएँ हैं। 28 दिसम्बर सन् 1977 ई0 मंे इनका निधन हो गया।

शब्दार्थ

थम-थम = रुक-रुक कर। **तम** = अन्धकार। **दल** = पत्ते। **चल-दल** = पीपल (जिनके पत्ते सदैव हिलते रहते हंै)। **सोनबलाक** = सुनहरे बगुले। **आर्द्र-सुख** = सुख में मग्न होकर।

कुछ करने को

1. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से एक कविता स्वयं बनाइए-

बादल, बरसात, पानी, बिजली, हरियाली, दादुर, मोर, पंख, फुहार, काले।

2. वर्षा ऋतु की कुछ और कविताओं को पढ़िए।

3. वर्षा ऋतु का एक सुन्दर-सा चित्र बनाइए।

प्रश्न-अभ्यास

विचार और कल्पना

1. कविता को पढ़कर आप के मन में सावन का जो चित्र उभरता है, उसे लिखिए।

2. सावन में चारों ओर हरियाली फैल जाती है। दादुर, मोर, चातक, सोनबलाक सभी खुशी से बोलने लगते हैं। आपको सावन कैसा लगता है- दस-पन्द्रह पंक्तियों में लिखिए।

कविता से

1. ताड़ के पत्ते किस रूप में दिखायी पड़ रहे हंै ?

2. हरसिंगार और बेला के फूलों पर सावन की बूँदों का क्या प्रभाव पड़ रहा है?

3. निम्नलिखित भाव कविता की किन पंक्तियों में आए हैं ?

(क) पीपल के पत्ते मानो ताली बजाकर नाच रहे हैं और नीम आनन्दित हो झूम रहीहै।

(ख) पानी की गिरती धाराओं से धरती के कण-कण में हरे-भरे अंकुर फूट पड़े हंै।

4. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) उड़ते सोनबलाक, आर्द्र-सुख से कर क्रन्दन।

(ख) रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अन्तर।

(ग) फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन।

5. कविता की अन्तिम पंक्तियों में कवि ने क्या इच्छा व्यक्त की है ?

भाषा की बात

1. 'झम-झम, झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के' - इसमें 'झम-झम' ध्वनि सूचक शब्द है। कविता में अन्य कई ध्वनि सूचक शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिससे सावन की बरसात का बड़ा सहज एवं सरस चित्रण हुआ है। इस प्रकार के ध्वनि सूचक शब्दों को चुनकर लिखिए।

2. कविता की उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिनमंे अनुप्रास अलंकार है।

प्रोजेक्ट कार्य-

अपने आस-पास जल के दूषित होने के इन कारणों के अतिरिक्त अन्य कारणों की जानकारी प्राप्त कर सूची बनाइए।

इसे भी जानें

आसमान से गिरने वाला निर्मल जल धरती पर आकर दूषित हो जाता है। दूषित जल से डायरिया, हैजा, पेचिस, टाइफाइड आदि बीमारियाँ फैलती हैं। जल दूषित होने के निम्नलिखित कारण हैं-

Û कुएँ एवं हैण्डपम्प के आस-पास गन्दगी का होना।

Û पीने के पानी में मानव-मल या सीवर का पानी मिल जाना।

Û छोटी-बड़ी फैक्टरियों के रसायन युक्त जहरीले पानी का नदियों एवं भूमिजल मंे मिलना।

Û रासायनिक खादों एवं कीटनाशक दवाओं का भूमिगत जल में मिलना।

मंजरी-7

अवधारणा चित्र-किसी पात्र अथवा विषयवस्तु के बारे में उसकी विशेषता, गुण, लाभ, हानि के प्रमुख बिन्दुओं के आधार पर चित्रण करना। जैसे-मनभावन सावन पाठ का अवधारणा चित्र निम्नवत् है-

मनभावन सावन

1. बादल

2. वर्षा

3. हरियाली

4. जल जमाव

5.तापमान में गिरावट

6. जलीय जन्तुआंे की

विशेष सक्रियता

मेघ गरजते हैं।

झम-झम मेघ बरसते हैं।

छम-छम बूँदें गिरती हैं।

चम-चम बिजली चमकती है।

मेढ़क टर-टर करते हैं।

मोर म्याव-म्याव करता है।

चातक पीउ-पीउ करता है।

पक्षी चहचहाते हैं।

पीपल के पत्ते तेजी से हिलते हैं।

नीम की डालियाँ झूमती हैं।

हरसिंगार के फूल झड़ते हैं।

सावन-

आषाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना।

ताड़ के पत्ते पंख की

तरह फैले लगते हैं।

उन पर वर्षा की धार पड़ती है।

पत्तों के किनारे से बूँदें टपकती हैं।

चैड़ी हथेली व लम्बी

अँगुलियों जैसे लगते हैं।

शिक्षकों हेतु निदर्शः-

इसी प्रकार अन्य पाठों के आधार पर अवधारणा चित्र बच्चों से बनवाएं।

मंजरी-7